संस्कृत VIII

प्रथमः पाठः सुभाषितानि

Page No. Date 23-4-2020

(4) पीत्वा रसं तु कटुकं मधुरं समानं
माधुर्यमेव जनयेन्मधुमक्षिकासौ ।
सन्तस्तथैव समसज्जनदुर्जनानां
श्रुत्वा वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति ।

सरलार्थ

मधुमक्खी कड़वे रस को पीकर मीठे शहद को उत्पन्न करती है। उसी तरह सज्जन लोग दुष्ट लोगों के कड़वे (कटु) वचनों को सुनकर भी सज्जनों के समान मीठे वचनो वाली वाणी का ही प्रयोग करते हैं।

(5) महतां प्रकृतिः सैव वर्धितानां परैरपि ।
न जहाति निजं भावं संख्यासु लाकृतिर्यथा ।

सरलार्थ

दूसरों द्वारा प्रशंसा किये जाने पर भी महानपुरुष अपना स्वभाव नहीं बदलता (छोड़ता) जिस प्रकार संख्याओं में नौ का अंक अपना स्वभाव (आकार) नहीं छोड़ता ।

(6) स्त्रियां रोचमानायां सर्वं तद् रोचते कुलम् ।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ।

सरलार्थ

स्त्रियों के अच्छा (प्रसन्न) होने पर सारा कुल अच्छा लगता है, ~~कल~~ अगर स्त्रियाँ ही परिवार में प्रसन्न नहीं है, तो कुछ भी अच्छा नहीं लगता ।

गृहकार्य → नोटबुक में लिखें एवम् हस्तलेख सुन्दर हो ।